"सची कुदरति"

• सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड । सचे तेरे लोअ सचे आकार । सचे तेरे करणे सरब बीचार । सचा तेरा अमर सचा दीबाण ।

अर्थः- हे सच्चे पातशाह ! तेरे पैदा किए हुए खंड और ब्रहमंड सच्चे हैं भाव, खंड और ब्रहमण्ड साजने वाला तेरा ये सिलसिला सदा के लिए अटल है । तेरे द्वारा बनाए हुए चौदह लोक और ये बेअंत आकार भी सदा स्थिर रहने वाले हैं तेरे काम और सारी विरासतें नाश - रहित हैं ।

सचा तेरा हुकम सचा फुरमाण । सचा तेरा करम सचा नीसाण । सचे तुध आखहि लख करोड़ि । सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ।

अर्थः- हे पातशाह ! तेरी बादशाही और तेरा दरबार अटल है, तेरा हुक्म और तेरा शाही फुरमान भी अटल है । तेरी बख्शिश सदा के लिए स्थिर है, और तेरी बख्शिशों के निशान भी भाव, ये बेअंत पदार्थ जो तू जीवों को दे रहा है सदा के वास्ते कायम हैं । लाखों - करोड़ों जीव, जो तुझे स्मरण कर रहे हैं, सच्चे हैं भाव, बेअंत जीवों का तुझे स्मरणा ये भी तेरा एक ऐसा चलाया हुआ काम है जो सदा के लिए स्थिर है । ये खंड - ब्रहमंड - लोक - आकार - जीव - जंतु आदि सारे ही सच्चे हरि के ताण और जोर में हैं भाव, इन सबकी हस्ती, सबका आसरा प्रभु खुद ही है ।

सची तेरी सिफति सची सालाह । सची तेरी कुदरत सचे पातिसाह । नानक सच धिआइनि सच । जो मरि जमै सु कच निकच ।1।म01।

अर्थः- तेरी महिमा करनी तेरा एक अटल सिलसिला है हे सच्चे पातशाह ! ये सारी रचना ही तेरा एक ना समाप्त होने वाला प्रबंध है । हे नानक ! जो जीव उस अविनाशी प्रभु को स्मरण करते हैं, वे भी उसका रूप हैं पर जो जनम - मरन के चक्कर में पड़े हुए हैं, वे अभी बिल्कुल कच्चे हैं भाव, उस असल ज्योति का रूप नहीं हुए ।

वडी वडिआई जा वडा नाउ । वडी वडिआई जा सच निआउ । वडी वडिआई जा निहचल थाउ ।

अर्थः- उस प्रभु की कीर्ति नहीं की जा सकती जिसका बहुत नाम है बहुत यशस्वी है । प्रभु का एक ये बड़ा गुण है कि उसका नाम सदा अटल है । उसकी ये एक बड़ी कीर्ति है कि उसका आसन अडोल है । प्रभु की ये एक बड़ी बड़ाई है कि वह सारे जीवों की अरदासों को जानता है और वह सभी के दिलों के भावों को समझता है ।

वडी वडिआई जाणै आलाउ । वडी वडिआई बुझै सभि भाउ । वडी वडिआई जा पुछि न दाति । वडी वडिआई जा आपे आपि । नानक कार न कथनी जाई । कीता करणा सरब रजाई ।2। महला-2।

अर्थः- ईश्वर की ये एक महानता है कि वह किसी की सलाह ले के जीवों को दातें नहीं दे रहा अपने आप बेअंत दातें बख्शता है क्योंकि उस जैसा और कोई नहीं है । हे नानक ! ईश्वर की कुदरति बयान नहीं की जा सकती, सारी रचना उसने अपने हुक्म में रची है ।

इह जग सचै की है कोठड़ी सचे का विच वास । इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणास ।

अर्थः- ये जगत प्रभु के रहने की जगह है, प्रभु इसमें बस रहा है । कई जीवों को अपने हुक्म अनुसार इस संसार - सागर में से बचा के अपने चरणों में जोड़ लेता है और कई जीवों को अपने हुक्म अनुसार ही इसमें डुबो देता है ।

इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विच निवास । एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि । नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगास ।3।पउड़ी।

अर्थः- कई जीवों को अपनी रजा अनुसार माया के मोह में से निकाल लेता है, कईयों को इसी में फसाए रखता है । ये बात भी बताई नहीं जा सकती कि रब किस का बेड़ा पार करता है । हे नानक ! जिस भाग्यशाली मनुष्य को प्रकाश बख्शता है, उसको गुरु के द्वारा समझ पड़ जाती है ।

नानक जीउ उपाइ कै लिखि नावै धरम बहालिआ । ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुण वखि कढे जजमालिआ ।

अर्थः- हे नानक ! जीवों को पैदा करके परमात्मा ने धर्म - राज को उनके सिर पर स्थापित किया हुआ है कि जीवों के किए कर्मों का लेखा लिखता रहे । धर्मराज की कचहरि में केवल सत्य द्वारा जीवों के कर्मों का निबेड़ा होता है भाव, वहां निर्णय का माप 'केवल सच' है, जिनके पल्ले 'सच' होता है उनको आदर मिलता है और बुरे कामों वाले जीव चुन के अलग कर दिए जाते हैं ।

थाउ न पाइअनि कूड़िआर मुह काल्है दोजक चालिआ । तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ । लिख नावै धरम बहालिआ ।2।

अर्थः- झूठ - ठगी करने वाले जीवों को वहाँ ठिकाना नहीं मिलता काला मुंह करके उन्हें नरक में धकेल दिया जाता है । हे प्रभु ! जो मनुष्य तेरे नाम में रंगे हुए हैं, वे यहाँ से बाजी जीत के जाते हैं और ठगी करने वाले बंदे मानव जनम की बाजी हार के जाते हैं । तूने हे प्रभु ! धर्मराज को जीवों के किए कर्मों का लेखा लिखने के लिए उन पर नियुक्त किया हुआ है ।

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार । एते चानण होदिआं गुर बिन घोर अंधार ।2। म0-1 ।

अर्थः- यदि एक सौ चंद्रमा चढ़ जाएं और हजार सूरज चढ़ जाएं और इतने प्रकाश के बावजूद भाव प्रकाश करने वाले जितने भी ग्रह सूर्य व चंद्रमा अपनी रोशनी देने लगें पर गुरु के बिना फिर भी घोर अंधकार ही है ।

नानक गुरु न चेतनी मनि आपणै सुचेत । छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंजे अंदर खेत ।

अर्थः- हे नानक ! जो मनुष्य गुरु को याद नहीं करते अपने आप में चतुर बने हुए हैं, वे ऐसे हैं जैसे किसी सूने खेत में अंदर से जले हुए तिल पड़े हुए हैं जिनका कोई मालिक नहीं बनता ।

खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह । फलीएहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विच सुआह ।3।

अर्थः- हे नानक ! बेशक कह कि खेत के मालिकाना बगैर पड़े हुए निखसमें उन बुआड़ के तिलों के सौ खसम हैं, वे विचारे फूलते हैं भाव, उनमें फल भी लगते हैं फलते भी हैं, फिर भी उनके तन में भाव, उनकी फली में तिलों की जगह राख ही होती है ।

आपीन्है आप साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ । दुयी कुदरति साजीऐ करि आसण डिठो चाउ ।

अर्थः- अकाल - पुरख ने अपने आप ही खुद को साजा बनाया और खुद ही अपने आप को प्रसिद्ध किया । फिर उसने कुदरत रची और उस में आसन जमा के भाव, कुदरत में व्यापक हो के इस जगत का खुद तमाशा देखने लग पड़ा ।

दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ । तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंद कवाउ । करि आसण डिठो चाउ ।1।

(1-462-463)

अर्थः- हे प्रभु ! तू खुद ही जीवों को दातें देने वाला है और स्वयं ही इनको बनाने वाला है । तू खुद ही प्रसन्न हो के जीवों को देता है और बख्शिशें करता है । तु सब जीवों के जीओं की जानने वाला है । जिंद और शरीर दे कर तू खुद ही ले लेगा भाव, तू खुद ही जीवात्मा और उसका लिबास शरीर देता है, खुद वापस ले लेता है । तू कुदरति में आसन जमा के तमाशा देख रहा है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"